अब कहाँ दूसरे के दुःख से दुःखी होने वाले (निदा फ़ाज़ली)

पाठ का परिचय

प्रस्तुत पाठ में संवेदनहीन होते जा रहे मनुष्य को प्राणिमात्र के प्रति संवेदनशील होने का संदेश दिया गया है। लेखक के अनुसार यह धरती सभी प्राणियों की साझी है। लेकिन स्वार्थी मनुष्य ने अन्य प्राणियों से उनका ठौर-ठिकाना भी छीन लिया है। नतीजा यह हुआ है कि अन्य जीवधारियों की या तो नस्लें खत्म हो गई हैं या वे आशियाने की तलाश में मारे-मारे फिर रहे हैं। लेखक ने सुलेमान, अयाज़ के पिता, नूह तथा अपनी माँ के प्रसंग द्वारा समस्त प्राणियों के लिए करुणा तथा प्रेम का भाव रखने का संदेश दिया है। उसने मनुष्यों को सावधान भी किया है कि जब प्रकृति की सहनशीलता समाप्त होने लगती है, तब उसका क्रोध भयानक रूप में प्रकट होता है, जिसका परिणाम मानवता को भुगतना पड़ता है।

पाठ के प्रमुख पात्र और उनका परिचय

1. **सुलेमान**– • ईसा से 1025 वर्ष पूर्व एक बादशाह • बाइबिल के सोलोमेन • मनुष्यों के ही नहीं, बल्कि सभी पशु-पक्षियों के राजा • जीव-जंतुओं की भी भाषा समझने वाले • बहुत दयालु और ईश्वर के प्रति आस्थावान्।
2. **शेख अयाज़ के पिता**– • बहुत दयालु एवं परोपकारी • जीव-जंतुओं के प्रति संवेदनशील।
3. **नूह**–वास्तविक नाम लशकर • बाइबिल के एक पैगंबर • पापों का प्रायश्चित्त करने वाले।
4. **लेखक की माँ**– • ममतामयी • जीवों के प्रति ही नहीं, पेड़-पौधों के प्रति भी संवेदनशील • परंपराओं के प्रति आस्थावान्।

पाठ का सारांश

सबका रखवाला सुलेमान–ईसा से 1025 वर्ष पूर्व एक बादशाह हुए थे। इन्हें बाइबिल में सोलोमेन और कुरआन में सुलेमान कहा गया है। वे मनुष्यों के ही नहीं, पशु-पक्षियों के भी राजा थे। वे जीव-जंतुओं की भी भाषा समझते थे। एक बार वे अपनी सेना के साथ जा रहे थे। कुछ चींटियों ने घोड़ों की टापों की आवाज़ सुनी तो उन्होंने डरकर एक-दूसरे से कहा कि बिलों में चलो, फौज़ आ रही है। सुलेमान ने उनकी बात सुनी और थोड़ी दूर रुककर बोले कि घबराओ नहीं, सुलेमान को खुदा ने सबका रखवाला बनाया है। मैं किसी के लिए मुसीबत नहीं, मोहब्बत हूँ। चींटियों ने सुलेमान के लिए ईश्वर से दुआ की।

शेख अयाज़ के परोपकारी पिता–शेख अयाज़ के पिता बहुत परोपकारी थे। एक बार वे कुएँ पर स्नान करने गए। वहाँ से एक च्योंटा उनके ऊपर चढ़कर उनके साथ घर आ गया। शेख अयाज़ के पिता जब खाना खाने बैठे तो उन्होंने अपनी बाँह पर रेंगते उस च्योंटे को देखा। उन्होंने सोचा कि यह बेचारा अपने घर से बेघर हो गया है। वे खाना छोड़कर खड़े हो गए और उस च्योंटे को उसके घर वापस छोड़कर आए।

पैगंबर नूह की करुणा–बाइबिल और दूसरे ग्रंथों में नूह नाम के पैगंबर का वर्णन आता है। उनका वास्तविक नाम लशकर था। एक बार उन्होंने एक घायल कुत्ते को दुत्कारते हुए कहा–"दूर हो जा गंदे कुत्ते।" कुत्ते ने यह दुत्कार सुनकर जवाब दिया ··· 'न मैं अपनी मर्ज़ी से कुत्ता हूँ और न तुम अपनी पसंद से इनसान हो। बनाने वाला सबका वही एक ईश्वर है।' उसकी बात सुनकर नूह का मन करुणा से भर गया और वह इस बात के पश्चात्ताप में जीवनभर रोते रहे।

दुनिया का बदलता रूप–यह दुनिया कैसे भी बनी हो, इसमें रहने वाले सभी जीवों का इस धरती पर बराबर का हक है, लेकिन इनसान ने अपनी बुद्धि से इसे बाँट दिया है। पहले सब बड़े-बड़े घरों में मिल-जुलकर रहते थे, लेकिन आज डिब्बे जैसे घरों में रहते हैं। जंगलों को काटकर नई-नई बस्तियाँ बसाई जा रही हैं। समुद्र को पीछे सरकाया जा रहा है। पशु-पक्षियों से उनका ठिकाना छीन लिया गया है। वे बेघर होकर इधर-उधर भटक रहे हैं।

प्रकृति से छेड़छाड़ का परिणाम–प्रकृति से छेड़छाड़ का परिणाम विनाशलीला के रूप में सामने आ रहा है। मौसम-चक्र में परिवर्तन आ गया है। सरदी, गरमी और वर्षा असमय और असंतुलित होती है। बाढ़, भूकंप, सूखा, तूफ़ान आदि प्राकृतिक प्रकोप बढ़ गए हैं। नए-नए असाध्य रोग उत्पन्न हो रहे हैं। मनुष्य के अत्याचार से प्रकृति की सहनशक्ति समाप्त हो रही है। वह अपना रौद्र रूप दिखाने लगी है।

लेखक की माँ की सीख–लेखक की माँ बहुत ही करुणामयी स्त्री थीं। उन्होंने लेखक को सिखाया था कि सूरज ढलने पर पेड़ों से पत्ते नहीं तोड़ने चाहिए, इससे पेड़ रोते हैं। दीया-बत्ती के समय फूलों को मत तोड़ो, वे बद्दुआ देते हैं। दरिया पर जाओ तो उसे सलाम करो, वह खुश होता है। कबूतरों को मत

सताया करो, वे हज़रत मुहम्मद साहब को अज़ीज हैं। मुर्गे को परेशान न किया करो।

ग्वालियर के मकान की घटना–ग्वालियर में लेखक का मकान था, उसके रोशनदान में कबूतर का जोड़ा रहता था। घोंसले में उसके दो अंडे थे। एक अंडा बिल्ली ने तोड़ दिया। लेखक की माँ ने दूसरे अंडे को बचाने के लिए उसे दूसरी जगह रखने की कोशिश की। इस कोशिश में वह अंडा फूट गया। माँ यह देखकर बहुत दुःखी हुई। उसने इस गुनाह को ख़ुदा से माफ़ कराने के लिए पूरे दिन रोज़ा रखा और कई बार नमाज़ पढ़ी।

बंबई के मकान की घटना–आज लेखक बंबई में रहता है। उसके फ्लैट में दो कबूतर भी रहते हैं। उनके छोटे-छोटे बच्चे हैं। उन्हें खिलाने-पिलाने के लिए वे बार-बार बाहर आते-जाते हैं। इससे उन्हें परेशानी होती है। इस परेशानी से बचने के लिए लेखक की पत्नी ने खिड़की में जाली लगवाई है। इस प्रकार कबूतरों से उनका वह ठिकाना छीन लिया गया है। लेखक कहता है–

अब कहाँ दूसरे के दुःख से दुःखी होने वाले।

शब्दार्थ

बाइबिल = ईसाइयों का पवित्र ग्रंथ। **कुरआन** = इस्लाम का पवित्र ग्रंथ। **हाकिम** = राजा/मालिक। **एक दफा** = एक बार। **लश्कर** = सेना। **कौर** = ग्रास/टुकड़ा। **च्योंटा** = एक प्रकार का कीड़ा। **रेंगना** = धीरे-धीरे चलना। **पैगंबर** = ईश्वर का संदेश वाहक। **दुत्कार** = अपमान, तिरस्कार। **लक़ब** = ख़िताब, ऐसा नाम जिससे व्यक्ति के गुणों का पता चले। **मुद्दत** = बहुत अधिक लंबा समय। **प्रतीकात्मक** = प्रतीक के रूप में। **एकांत** = अकेला। **वजूद** = अस्तित्व। **दालान** = बरामदा। **ज़लज़ले** = भूकंप। **नेचर** = प्रकृति। **उकड़ू** = घुटने मोड़ कर बैठना। **औंधे मुँह** = मुँह के बल। **काबिल** = योग्य/लायक। **अज़ीज़** = प्यारा। **मज़ार** = दरगाह। **गुंबद** = गोलाकार शिखर। **इज़ाज़त** = आज्ञा। **बद्दुआ** = शाप। **दरिया** = नदी। **गुनाह** = पाप। **रोज़ा** = उपवास। **परिंदे** = पक्षी। **बस्ती** = गाँव। **डेरा** = अस्थायी घर। **मचान** = बाँस आदि की सहायता से बनाया गया ऊँचा स्थान/मंच। **आशियाना** = घर। **खामोश** = चुप-चाप।

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

गद्यांशों पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

(1) बाइबिल के सोलोमन जिन्हें कुरआन में सुलेमान कहा गया है, ईसा से 1025 वर्ष पूर्व एक बादशाह थे। कहा गया है, वह केवल मानव जाति के ही राजा नहीं थे, सारे छोटे-बड़े पशु-पक्षी के भी हाकिम थे। वह इन सबकी भाषा भी जानते थे। एक दफा सुलेमान अपने लश्कर के साथ एक रास्ते से गुज़र रहे थे। रास्ते में कुछ चींटियों ने घोड़ों की टापों की आवाज़ सुनी तो डर कर एक-दूसरे से कहा, 'आप जल्दी से अपने-अपने बिलों में चलो, फ़ौज आ रही है।' सुलेमान उनकी बातें सुनकर थोड़ी दूर पर रुक गए और चींटियों से बोले, "घबराओ नहीं, सुलेमान को खुदा ने सबका रखवाला बनाया है। मैं किसी के लिए मुसीबत नहीं हूँ, सबके लिए मुहब्बत हूँ।"

1. **सोलोमन कब बादशाह थे–**
   (क) ईसा से 1000 वर्ष पूर्व (ख) ईसा से 1025 वर्ष पूर्व
   (ग) ईसा से 1500 वर्ष पूर्व (घ) ईसा से 1200 वर्ष पूर्व।
2. **सुलेमान किसके साथ रास्ते से गुज़र रहे थे–**
   (क) अपने भाइयों के साथ (ख) अपने मंत्रियों के साथ
   (ग) अपने लश्कर के साथ (घ) अपने मित्रों के साथ।
3. **चींटियों के डर के कारणों पर विचार कीजिए और उचित विकल्प का चयन कीजिए–**
   (i) घंटों की आवाज़
   (ii) घोड़ों की टापों की आवाज़
   (iii) सेना का शोर
   (iv) बादलों का गर्जन
   (क) केवल (i) (ख) केवल (ii)
   (ग) (iii) और (iv) (घ) केवल (iv).
4. **निम्नलिखित कथन-कारण को पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए–**
   कथन (A)–सोलोमन ईसा से 1025 वर्ष पूर्व बादशाह थे।
   कारण (R)–वे मनुष्यों के ही नहीं, पशु-पक्षियों के भी शासक थे।
   (क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
   (ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
5. **घोड़ों की टापों से डरकर चींटियों ने एक-दूसरे से क्या कहा–**
   (क) जल्दी से पेड़ पर चढ़ जाओ।
   (ख) हथियार तैयार करो, फ़ौज आ रही है।
   (ग) जल्दी से बिलों में चलो, फ़ौज आ रही है।
   (घ) कहीं गुफा में जाकर छिप जाओ।

उत्तर— 1. (ख) 2. (ग) 3. (ख) 4. (ख) 5. (ग)।

(2) ऐसी एक घटना का ज़िक्र सिंधी भाषा के महाकवि शेख अयाज़ ने अपनी आत्मकथा में किया है। उन्होंने लिखा है–'एक दिन उनके पिता कुएँ से नहाकर लौटे। माँ ने भोजन परोसा। उन्होंने जैसे ही रोटी का कौर तोड़ा। उनकी नज़र अपनी बाजू पर पड़ी। वहाँ एक काला च्योंटा रेंग रहा था। वह भोजन छोड़कर उठ खड़े हुए।' माँ ने पूछा, 'क्या बात है? भोजन अच्छा नहीं लगा?' शेख अयाज़ के पिता बोले, 'नहीं, यह बात नहीं है। मैंने एक घर वाले को बेघर कर दिया है। उस बेघर को कुएँ पर उसके घर छोड़ने जा रहा हूँ।'

1. **शेख अयाज़ किस भाषा के महाकवि थे–**
   (क) हिंदी के (ख) अंग्रेज़ी के
   (ग) सिंधी के (घ) मराठी के।
2. **शेख अयाज़ के पिता द्वारा भोजन छोड़कर उठ जाने के कारणों पर विचार कीजिए और उचित विकल्प का चयन कीजिए–**
   (i) नाराज़ होना।
   (ii) भोजन अच्छा न होना।
   (iii) एक बेघर जीव को उसके घर पहुँचाना।
   (iv) भोजन की इच्छा न होना
   (क) केवल (i) (ख) (ii) और (iii)
   (ग) (ii) और (iv) (घ) केवल (iii).
3. **निम्नलिखित कथन-कारण को पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए–**
   कथन (A)–शेख अयाज़ के पिता भोजन छोड़कर उठ खड़े हुए।
   कारण (R)–भोजन अच्छा नहीं बना था।

(5) ग्वालियर से मुंबई की दूरी ने संसार को काफ़ी कुछ बदल दिया है। वर्सोवा में जहाँ आज मेरा घर है, पहले यहाँ दूर तक जंगल था। पेड़ थे, परिंदे थे और दूसरे जानवर थे। अब यहाँ समंदर के किनारे लंबी-चौड़ी बस्ती बन गई है। इस बस्ती ने न जाने कितने परिंदों-चरिंदों से उनका घर छीन लिया है। इनमें से कुछ शहर छोड़कर चले गए हैं। जो नहीं जा सके हैं उन्होंने यहीं-वहीं डेरा डाल लिया है। इनमें से दो कबूतरों ने मेरे फ्लैट के एक मचान में घोंसला बना लिया है। बच्चे अभी छोटे हैं। उनके खिलाने-पिलाने की ज़िम्मेदारी अभी बड़े कबूतरों की है। वे दिन में कई-कई बार आते-जाते हैं। और क्यों न आएँ-जाएँ आखिर उनका भी घर है। लेकिन उनके आने-जाने से हमें परेशानी भी होती है। वे कभी किसी चीज़ को गिराकर तोड़ देते हैं। कभी मेरी लाइब्रेरी में घुसकर कबीर या मिर्ज़ा गालिब को सताने लगते हैं। इस रोज़-रोज़ की परेशानी से तंग आकर मेरी पत्नी ने उस जगह जहाँ उनका आशियाना था, एक जाली लगा दी है, उनके बच्चों को दूसरी जगह कर दिया है। उनके आने की खिड़की को भी बंद किया जाने लगा है। खिड़की के बाहर अब दोनों कबूतर रात-भर खामोश और उदास बैठे रहते हैं।

1. ग्वालियर से मुंबई की दूरी ने किसे बदल दिया था–

(क) लेखक को (ख) संसार को

(ग) लेखक की पत्नी को (घ) लेखक के परिवार को।

2. लेखक को कबूतरों से होने वाली परेशानी के कारणों पर विचार कीजिए और उचित विकल्प का चयन कीजिए–

(i) बार-बार आना-जाना

(ii) किसी चीज़ को गिराकर तोड़ देना

(iii) किताबों को गंदा करना

(iv) शोर मचाना

(क) (i) और (ii) (ख) (ii) और (iii)

(ग) (iii) और (iv) (घ) (i), (ii) और (iii).

3. निम्नलिखित कथन-कारण को पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए–

कथन (A)–ग्वालियर से मुंबई की दूरी ने संसार को काफ़ी बदल दिया है।

कारण (R)–वर्सोवा में जहाँ आज लेखक का घर है, पहले यहाँ दूर तक जंगल था।

(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

4. कबूतरों के बच्चों को खिलाने-पिलाने की जिम्मेदारी किसकी है–

(क) लेखक की (ख) लेखक की पत्नी की

(ग) बड़े कबूतरों की (घ) घर के नौकरों की।

5. कबूतरों से तंग आकर लेखक की पत्नी ने क्या किया–

(क) कबूतरों के आशियाने की जगह जाली लगा दी।

(ख) उनके बच्चों को दूसरी जगह कर दिया।

(ग) उनके आने-जाने की खिड़की को बंद करने लगी।

(घ) उपर्युक्त सभी।

उत्तर— 1. (ख) **2.** (घ) **3.** (घ) **4.** (ग) **5.** (घ)।

(6) बाइबिल और दूसरे पावन ग्रंथों में नूह नाम के एक पैगंबर का ज़िक्र मिलता है। उनका असली नाम लशकर था। लेकिन अरब में उन्हें नूह के लकब से याद किया जाता है। वह इसलिए कि वह सारी उम्र रोते रहे। इसका कारण एक ज़ख्मी कुत्ता था। नूह के सामने से एक बार घायल कुत्ता गुज़रा। नूह ने उसे दुत्कारते हुए कहा, 'दूर हो जा गंदे कुत्ते!' इस्लाम में कुत्तों को गंदा समझा जाता है। कुत्ते ने उनकी दुत्कार सुनकर जवाब दिया, 'न मैं अपनी मर्ज़ी से कुत्ता हूँ, न तुम अपनी पसंद से इनसान हो। बनाने वाला सबका तो वही एक है।'

मट्टी से मट्टी मिले, खो के सभी निशान।
किसमें कितना कौन है, कैसे हो पहचान।।

नूह ने जब उसकी बात सुनी तब दुःखी हो मुद्दत तक रोते रहे। 'महाभारत' में युधिष्ठिर का जो अंत तक साथ निभाता नज़र आता है, वह भी प्रतीकात्मक रूप में एक कुत्ता ही था। ***(CBSE 2021 Term-1)***

1. सभी जीवों का जन्म किसकी मर्ज़ी से होता है?

(क) स्वयं को (ख) धर्म की

(ग) कर्म की (घ) ईश्वर की।

2. नूह द्वारा कुत्ते को दुत्कारने के कारणों पर विचार कीजिए और उचित विकल्प का चयन कीजिए–

(i) कुत्ते का ज़ख्मी होना

(ii) कुत्ते का पागल होना

(iii) इस्लाम में कुत्ते को गंदा समझा जाना

(iv) कुत्ते का खतरनाक होना।

(क) (i) और (ii) (ख) (i) और (iii)

(ग) (ii) और (iv) (घ) केवल (iv).

3. निम्नलिखित कथन-कारण को पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए–

कथन (A)–नूह के सामने से एक बार घायल कुत्ता गुज़रा।

कारण (R)–इस्लाम में कुत्तों को गंदा समझा जाता है।

(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

4. 'मट्टी से मट्टी मिले, खोके सभी निशान' का आशय है–

(क) मृत्युपरांत सभी जीवों का निजी अस्तित्व समाप्त हो जाता है

(ख) मिट्टी, मिट्टी में ही मिलाई जा सकती है

(ग) सभी जीवों का निर्माण मिट्टी से नहीं हुआ है

(घ) सभी जीवों का अस्तित्व स्वयं उसके वश में है।

5. नूह ने कुत्ते को क्यों दुत्कारा?

(क) वह उनसे अधिक ज्ञानी था।

(ख) वह उन्हें काफी खतरनाक लगा।

(ग) उन्हें कुत्ते पसंद नहीं थे।

(घ) वे कुत्ते को गंदा मानते थे।

उत्तर– 1. (घ) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (क) **5.** (घ)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

1. 'अब कहाँ दूसरे के दुःख से दुःखी होने वाले' पाठ के लेखक हैं–

(क) प्रह्लाद अग्रवाल (ख) निदा फ़ाजली

(ग) रवींद्र केलकर (घ) लीलाधर मंडलोई।

2. **निदा फ़ाज़ली का जन्म किस नगर में हुआ–**
(क) लखनऊ (ख) दिल्ली
(ग) कानपुर (घ) मुंबई।

3. **'अब कहाँ दूसरे के दुःख से दुःखी होने वाले' पाठ के आधार पर शेख अयाज़ के पिता द्वारा भोजन छोड़कर उठने का कारण था–**
(CBSE 2023)
(क) भोजन का अच्छा नहीं लगना
(ख) पेट का भर जाना
(ग) आवश्यक काम का याद आ जाना
(घ) बेघर जीव को उसके घर पहुँचाना।

4. **चींटियों ने किसकी आवाज़ सुनी–**
(क) बाजे की (ख) शेर के दहाड़ने की
(ग) घोड़ों की टापों की (घ) घंटियों की।

5. **ग्वालियर से मुंबई के बीच लेखक ने एक बदलाव महसूस किया कि–**
(क) बस्ती ने जंगल का रूप ले लिया है
(ख) जंगल ने बस्ती का रूप ले लिया है
(ग) वर्सोवा नाम का शहर बस गया है
(घ) पशु-पक्षी जंगलों को छोड़कर चले गए हैं।

6. **लेखक के घर में घोंसला किसने बनाया–**
(क) चिड़ियों ने (ख) गौरैया ने
(ग) कबूतरों ने (घ) मैना ने।

7. **कबूतरों का दूसरा अंडा किससे टूटा–**
(क) लेखक से (ख) लेखक की पत्नी से
(ग) नौकरानी से (घ) लेखक की माँ से।

8. **जनसंख्या वृद्धि के क्या दुष्परिणाम हैं–**
(क) वृक्षों की अंधाधुंध कटाई (ख) समुद्र को पीछे सरकाना
(ग) प्राकृतिक प्रकोप (घ) ये सभी।

9. **निम्नलिखित में कौन-से वाक्य 'अब कहाँ दूसरे के दुःख से दुःखी होने वाले' पाठ से मेल खाते हैं–**
(i) यह धरती सभी जीवधारियों के लिए है
(ii) हमें सबके प्रति संवेदनशील होना चाहिए
(iii) मनुष्य प्रकृति का संतुलन बिगाड़ रहा है
(iv) मुनष्य अन्य जीवों को ठौर-ठिकाना दे रहा है।
(क) (i) और (ii) (ख) (ii) और (iii)
(ग) (i), (ii) और (iii) (घ) केवल (iv).

10. **धरती में किस-किस की हिस्सेदारी है–**
(क) समुद्र की (ख) पर्वतों की
(ग) पशु-पक्षियों की (घ) ये सभी।

11. **पहले पूरा संसार कैसा था–**
(क) एक प्रदेश जैसा (ख) एक गाँव जैसा
(ग) एक नगर जैसा (घ) एक परिवार जैसा।

12. **जीवन कैसे घरों में सिमटने लगा है–**
(क) छोटे-छोटे डिब्बे जैसे (ख) नाव जैसे
(ग) जहाज जैसे (घ) गुब्बारे जैसे।

13. **हज़रत मुहम्मद के प्रिय कौन हैं–**
(क) मुर्गा (ख) कबूतर
(ग) बगुला (घ) इनमें से कोई नहीं।

14. **माँ ने मुर्गे को परेशान न करने के लिए क्यों कहा–**
(क) क्योंकि वह हज़रत मुहम्मद को अज़ीज़ है
(ख) क्योंकि वह मुल्ला को अज़ीज़ है
(ग) क्योंकि वह लेखक की माँ को अज़ीज़ है
(घ) क्योंकि वह मुल्ला से पहले अज़ान देकर सबको सवेरे जगाता है।

15. **माँ ने लेखक को दरिया पर जाकर क्या करने को कहा–**
(क) नहाने को (ख) सलाम करने को
(ग) पानी लाने को (घ) ये सभी।

16. **लेखक की माँ सूर्य अस्त होने पर क्या करने को मना करती थीं–**
(क) दीया-बत्ती करने को (ख) खेलने को
(ग) खाना खाने को (घ) पेड़ों से पत्ते तोड़ने को।

17. **कबूतरों को अपनी मज़ार के नीले गुंबद पर घोंसला बनाने की अनुमति किसने दी–**
(क) लेखक ने (ख) नूह ने
(ग) हज़रत मुहम्मद ने (घ) शेख अयाज़ ने।

18. **शेख अयाज़ के पिता के अनुसार उन्होंने किसे बेघर कर दिया था–**
(क) काले च्योंटे को (ख) चींटियों को
(ग) चूहे को (घ) चिड़िया को।

19. **अंडे टूट जाने पर कबूतरों की क्या दशा थी–**
(क) वे चुपचाप बैठे थे
(ख) वे ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहे थे
(ग) वे अंडे तोड़ने वाले पर हमला कर रहे थे
(घ) वे परेशानी में इधर-उधर फड़फड़ा रहे थे।

20. **लेखक की माँ द्वारा किए गए प्रायश्चित्त में सम्मिलित नहीं है–**
(क) कबूतरों को दाना खिलाना (ख) पूरे दिन रोज़ा रखना
(ग) दिन-भर रोते रहना (घ) बार-बार नमाज़ पढ़ना।

उत्तर– 1. (ख) **2.** (ख) **3.** (घ) **4.** (ग) **5.** (ख) **6.** (ग) **7.** (घ) **8.** (घ) **9.** (ग) **10.** (घ) **11.** (घ) **12.** (क) **13.** (ख) **14.** (घ) **15.** (ख) **16.** (घ) **17.** (ग) **18.** (क) **19.** (घ) **20.** (क)।

भाग-2
(वर्णनात्मक प्रश्न)

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1 : लेखक की पत्नी को खिड़की में जाली क्यों लगवानी पड़ी?

उत्तर : लेखक के फ़्लैट में दो कबूतरों ने घोंसला बना लिया है। उनके छोटे-छोटे बच्चे हैं। उन्हें खिलाने-पिलाने के लिए कबूतरों को दिन में कई बार आना-जाना पड़ता है। इससे घरवालों को परेशानी होती है। वे किताबों को गंदा कर देते हैं, चीज़ों को गिराकर तोड़ देते हैं। इस परेशानी से बचने के लिए लेखक की पत्नी को खिड़की में जाली लगवानी पड़ी।

प्रश्न 2 : 'जो जितना बड़ा होता है, उसे उतना ही कम गुस्सा आता है।' आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : **आशय**– इसका आशय यह है कि जो जितना बड़ा होता है, उसका हृदय भी उतना ही विशाल होता है। उसमें सहनशक्ति भी अधिक होती है; अतः उसे कम गुस्सा आता है, लेकिन जब गुस्सा आता है तो उसे रोकना कठिन हो जाता है। बंबई में समुद्र बिल्डरों के अत्याचार को सहन करता रहा, लेकिन जब गुस्सा आया तो ऐसा रौद्र रूप दिखाया कि सारी बंबई काँप उठी।

प्रश्न 3 : अरब में लशकर को नूह के नाम से क्यों याद करते हैं?
(CBSE 2016)

उत्तर : अरब में लशकर को नूह के नाम से इसलिए याद किया जाता है; क्योंकि वह उम्रभर रोते रहे। इसका कारण यह था कि उन्होंने एक बार एक घायल कुत्ते को दुत्कारते हुए कहा– 'दूर हो जा गंदे कुत्ते।' कुत्ते ने जवाब दिया कि न मैं अपनी मर्ज़ी से कुत्ता हूँ और न तुम अपनी मर्ज़ी से इनसान हो। सबको बनाने वाला तो वही एक है। नूह ने जब यह बात सुनी तो वे बहुत दुःखी हुए और उम्रभर रोते रहे।

प्रश्न 4 : **लेखक की माँ किस समय पेड़ों के पत्ते तोड़ने के लिए मना करती थीं और क्यों?**

उत्तर : लेखक की माँ सूरज छिपने के बाद पेड़ों के पत्ते तोड़ने के लिए मना करती थीं। उनका मानना था कि उस समय पत्ते तोड़ने से पेड़ रोते हैं। वे पत्ते तोड़ने वाले को बद्दुआ देते हैं।

प्रश्न 5 : **लेखक की माँ ने पूरे दिन का रोज़ा क्यों रखा?**

उत्तर : लेखक के मकान में कबूतरों का घोंसला था, जिसमें दो अंडे थे। एक अंडा बिल्ली ने तोड़ दिया था। दूसरे अंडे को माँ बिल्ली की पहुँच से दूर रखना चाहती थी। इस कोशिश में दूसरा अंडा भी टूट गया। माँ बहुत दुःखी हुईं और इस गुनाह को खुदा से माफ़ कराने के लिए उसने पूरे दिन रोज़ा रखा और बार-बार नमाज़ पढ़ी।

प्रश्न 6 : **प्रकृति में आए असंतुलन का क्या परिणाम हुआ?**

उत्तर : प्रकृति में आए असंतुलन के कारण प्रदूषण बहुत बढ़ गया है। मौसम-चक्र में परिवर्तन आ गया है। अब गरमी में गरमी अधिक होती है और सरदी में सरदी अधिक होती है। वर्षा असमय और असंतुलित होती है। इसके अलावा भूकंप, बाढ़, तूफ़ान और नित्य नए-नए रोग भी प्राकृतिक असंतुलन का ही परिणाम हैं।

प्रश्न 7 : **'डेरा डालने' से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर : 'डेरा डालने' का आशय है—अस्थायी रूप से कहीं निवास करना। यह बात उन पक्षियों और जानवरों के विषय में कही गई है, जो नई-नई बस्तियाँ बसाने के लिए काटे गए जंगलों के कारण बेघर हो गए हैं। ऐसे पक्षी और जानवर, इधर-उधर प्रतिकूल परिस्थितियों में और असुविधाजनक स्थानों पर रहने के लिए विवश हैं। लेखक के घर के रोशनदान में रहने वाले कबूतर इसका उदाहरण हैं।

प्रश्न 8 : **समुद्र के गुस्से की क्या वजह थी? उसने अपना गुस्सा कैसे निकाला?** ***(CBSE 2015)***

उत्तर : समुद्र के गुस्से की वजह थी कि उसे निरंतर सिमटना पड़ रहा था। बिल्डर इमारतों के निर्माण कार्य हेतु उसे धीरे-धीरे पीछे धकेलते जा रहे थे। उसने स्वयं को काफ़ी सिकोड़ा, पर जब उसकी सहन-शक्ति समाप्त हो गई तो उसे गुस्सा आ गया। उसने अपना गुस्सा प्रकट करने के लिए लहरों पर दौड़ते हुए तीन जहाज़ों को उठाकर बच्चों की गेंद की तरह तीनों दिशाओं में फेंक दिया। एक जहाज़ वर्ली के समुद्र के किनारे पर जा गिरा तो दूसरा जहाज़ बांद्रा में कार्टर रोड के सामने औंधे मुँह गिरा और तीसरा गेट-वे ऑफ इंडिया पर टूटकर सैलानियों का नज़ारा बना। वे तीनों जहाज़ अत्यधिक कोशिश करने के बावजूद भी दुबारा चलने-फिरने योग्य न रहे।

प्रश्न 9 : **'नेचर (प्रकृति) की सहनशक्ति की एक सीमा होती है। नेचर के गुस्से का एक नमूना कुछ साल पहले बंबई में देखने को मिला था।' आशय स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर : **आशय**—इस पंक्ति में प्रकृति का स्वभाव बताते हुए उसका शोषण न करने की बात कही गई है। इसका आशय यह है कि प्रकृति वैसे तो बहुत सहनशील है, लेकिन वह एक सीमा तक ही अपना शोषण सहन करती है। जब उसकी सहनशीलता समाप्त हो जाती है तो वह ऐसा रौद्र रूप दिखाती है कि मनुष्य त्राहि-त्राहि करने लगता है। इसका नमूना बंबई में देखने को मिला, जब शांत समुद्र ने गुस्से में आकर तीन जहाज़ों को गेंद की तरह फेंक दिया था। इसे देखकर बंबई के लोग भय से काँपने लगे थे।

प्रश्न 10 : **'मट्टी से मट्टी मिले,**
खो के सभी निशान,
किसमें कितना कौन है,
कैसे हो पहचान'
इन पंक्तियों के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : इन पंक्तियों के माध्यम से लेखक यह बताना चाहता है कि इस धरती पर जितने भी प्राणी हैं, वे सब एक ही मिट्टी से बने खिलौने हैं। सबका रचयिता ईश्वर है। इनसान या कुत्ता बनना अपने हाथ में नहीं है। यह ईश्वर के अधीन है। इसलिए संसार में कोई गंदा या अच्छा, छोटा या बड़ा नहीं है, सब बराबर हैं। इसका प्रमाण यह है कि मृत्यु के बाद सब मिट्टी में मिल जाते हैं। उस समय यह पता नहीं किया जा सकता कि किसकी मिट्टी कितनी है और कैसी है। सबकी मिट्टी एक हो जाती है।

प्रश्न 11 : **'न मैं अपनी मर्ज़ी से कुत्ता हूँ, न तुम अपनी मर्ज़ी से इनसान हो' कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर : इस पंक्ति का आशय यह है कि संसार में जीव का जन्म किस योनि में होगा, यह उसके अपने हाथ में नहीं है। यह तो ईश्वर की इच्छा पर निर्भर है कि वह उसे जानवर बनाता है या इनसान, लेकिन संसार के सभी प्राणी मूलरूप से समान हैं; क्योंकि उन्हें बनाने वाला एक ही है और वे सब एक ही मिट्टी से बने होते हैं।

प्रश्न 12 : **लेखक ने ग्वालियर से बंबई तक किन बदलावों को महसूस किया? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।** ***(CBSE 2020)***

अथवा **लेखक ने ग्वालियर से बंबई तक प्रकृति और मनुष्य के संबंधों में किन बदलावों को महसूस किया? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।** ***(CBSE 2020)***

उत्तर : ग्वालियर से बंबई तक लेखक ने यह बदलाव महसूस किया कि वर्सोवा में आज जहाँ लेखक का घर है, पहले वहाँ दूर तक जंगल था। इसमें अनेक पक्षी और जानवर रहते थे। आज यहाँ समुद्र के किनारे लंबी-चौड़ी बस्ती बन गई है। इस बस्ती ने पशु-पक्षियों के घर छीन लिए हैं। इनमें से कुछ शहर छोड़कर चले गए हैं और कुछ ने इधर-उधर डेरा डाल लिया है।

प्रश्न 13 : **लेखक के घर में खिड़की के बाहर दोनों कबूतर उदास क्यों बैठे रहते हैं?**

उत्तर : लेखक के घर में कबूतरों के कारण बहुत परेशानी हो रही थी। उनके आने-जाने से कुछ चीज़ें गिरकर टूट गई थीं। वे कुछ सामान को गंदा भी कर देते थे। इस परेशानी से बचने के लिए लेखक की पत्नी ने खिड़की में जाली लगवा दी थी। कबूतरों से उनका घर छिन गया था, इसलिए वे खिड़की के बाहर उदास बैठे रहते थे।

प्रश्न 14 : **'अब कहाँ दूसरों के दुःख से दुःखी होने वाले' पाठ में लेखक की माँ उन्हें प्रकृति का ख्याल रखने के बारे में क्या-क्या बताती थीं? इनके माध्यम से वह लेखक में किन जीवन-मूल्यों का विकास करना चाहती थी?** ***(CBSE 2023)***

उत्तर : 'अब कहाँ दूसरे के दुःख से दुःखी होने वाले' पाठ में लेखक की माँ बताती हैं कि सूरज ढलने पर पेड़ों से पत्ते नहीं तोड़ने चाहिए, पेड़ रोते हैं। दीया-बत्ती के समय फूल नहीं तोड़ने चाहिए, वे बद्दुआ देते हैं। दरिया पर जाओ तो उसे सलाम करना चाहिए, वह खुश होता है। कबूतरों को नहीं सताना चाहिए, वे हजरत मुहम्मद को अज़ीज़ हैं। मुर्गे को परेशान नहीं करना चाहिए। इन बातों के माध्यम से वह लेखक में दया, करुणा, प्रकृति-प्रेम और संवेदनशीलता आदि जीवन-मूल्यों का विकास करना चाहती हैं।

प्रश्न 15 : सुलेमान कौन थे? उनकी क्या विशेषता थी?

उत्तर : सुलेमान ईसा से 1025 वर्ष पूर्व एक बादशाह थे। इन्हें बाइबिल में सोलोमेन और कुरआन में सुलेमान कहा गया है। वे केवल मानव जाति के ही नहीं, बल्कि पशु-पक्षियों के भी बादशाह थे। वे पशु-पक्षियों की भी भाषा समझते थे।

प्रश्न 16 : प्रकृति में आए असंतुलन से क्या-क्या बदलाव आए हैं? इससे मानव-जाति के लिए क्या-क्या खतरे पैदा हो गए हैं? 'अब कहाँ दूसरे के दुःख में दुःखी होने वाले' पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर : प्रकृति में आए असंतुलन से मौसम-चक्र में परिवर्तन आ गया है। अब सरदी, गरमी और बरसात समय पर नहीं होती और यदि होती है तो सामान्य से अधिक या कम होती है। बाढ़, भूकंप, आँधी-तूफ़ान, सूखा और सुनामी आदि प्राकृतिक आपदाओं में वृद्धि हो गई है। तरह-तरह के असाध्य रोगों ने समाज को घेर लिया है। इससे मानव-समाज के अस्तित्व को खतरा उत्पन्न हो गया है।

प्रश्न 17 : कैसे कह सकते हैं कि 'अब कहाँ····· ' पाठ के लेखक की माँ के मन में पशु-पक्षियों के प्रति प्रेम भरा है?

उत्तर : 'अब कहाँ दूसरे के दुःख से दुःखी होने वाले' पाठ के लेखक की माँ के मन में पशु-पक्षियों के प्रति प्रेम भरा था, इसलिए वह कबूतरों को सताने से सभी को मना करती थी। मुर्गे को परेशान करने से रोकती थी। कबूतर का अंडा असावधानी से टूट जाने के कारण अपने गुनाह को माफ़ कराने के लिए पूरा दिन रोज़ा रखा था। यहाँ तक कि शाम के समय पेड़ों को सताने तथा फूल तोड़ने से भी सभी को मना करती थी।

प्रश्न 18 : 'अब कहाँ दूसरे के दुःख से दुःखी होने वाले' पाठ के आधार पर लिखिए कि पहले और अब के संसार में जीवन-शैली में क्या अंतर आ गया है? ***(CBSE 2023)***

उत्तर : 'अब कहाँ दूसरे के दुःख से दुःखी होने वाले' पाठ के आधार पर हम कह सकते हैं कि पहले और अब के संसार की जीवन-शैली में बहुत अंतर आ गया है। लेखक की माँ कबूतरों के अंडे टूट जाने पर उन्हें दुःखी देखकर स्वयं भी दुःखी हो जाती है और रोने लगती है। अब लेखक की पत्नी कबूतरों को घर में आने से रोकने के लिए रोशनदान में जाली लगवा देती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पहले लोगों के मन में दूसरे जीवों के प्रति संवेदनशीलता थी। आज वह संवेदनशीलता समाप्त हो गई है। अब दूसरे के दुःख में दुःखी होने वाले लोग नहीं रहे हैं।

प्रश्न 19 : शेख अयाज़ के पिता भोजन छोड़कर क्यों उठ खड़े हुए? इससे उनके व्यक्तित्व की किस विशेषता का पता चलता है?

(CBSE 2015)

उत्तर : शेख अयाज़ के पिता कुएँ पर स्नान करने गए थे। वहाँ से एक काला च्योंटा उनके बाजू पर चढ़कर घर आ गया। जब शेख अयाज़ के पिता भोजन करने बैठे तो उनकी नज़र च्योंटे पर पड़ी। वे उसे वापस कुएँ पर पहुँचाने के लिए भोजन छोड़कर खड़े हो गए। इससे पता चलता है कि वे बहुत दयालु थे तथा उनके मन में छोटे-छोटे जीव-जंतुओं के प्रति भी गहरी संवेदना थी।

प्रश्न 20 : 'अब कहाँ दूसरे के दुःख से दुःखी होने वाले' पाठ में निहित उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए। ***(CBSE 2016)***

उत्तर : प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य मनुष्य की मरती हुई संवेदना को पुनर्जीवित करना है। इस संसार में सभी प्राणियों की हिस्सेदारी है। मनुष्य को अन्य प्राणियों से उनका रहने, खाने और जीने का अधिकार नहीं छीनना चाहिए। यह पाठ संसार में सभी प्राणियों के प्रति प्रेम तथा करुणा का भाव रखने का संदेश देता है। प्रकृति के साथ छेड़छाड़ करने का परिणाम मनुष्य के लिए आत्मघाती हो सकता है। यह बताना भी इस पाठ का उद्देश्य है।

प्रश्न 21 : शेख अयाज़ के पिता अपने बाजू पर काला च्योंटा रेंगता देख भोजन छोड़कर क्यों उठ खड़े हुए?

अथवा **शेख अयाज़ के पिता भोजन छोड़कर क्यों उठ खड़े हुए? 'अब कहाँ दूसरे के दुःख से दुःखी होने वाले' पाठ के आधार पर लिखिए।** ***(CBSE 2017)***

उत्तर : शेख अयाज़ के पिता कुएँ पर स्नान करने गए थे। वहाँ से एक च्योंटा उनके ऊपर चढ़कर उनके घर आ गया। जब वे भोजन करने बैठे तो उन्होंने उस च्योंटे को अपनी बाजू पर रेंगते देखा। वे बहुत दयालु थे। उन्होंने सोचा कि यह बेचारा च्योंटा अपने घर से बेघर हो गया है, इसलिए वे उसे उसके घर (कुएँ पर) पहुँचाने के लिए भोजन छोड़कर खड़े हो गए।

प्रश्न 22 : "मट्टी से मट्टी मिले खो के सभी निशान" उक्ति के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?

उत्तर : इस उक्ति के माध्यम से लेखक कहना चाहता है कि संसार के सभी प्राणी एक ही मिट्टी के बने खिलौने हैं। अंत में सब इसी मिट्टी में मिल जाते हैं। सबको बनाने वाला भी एक ही है। उसने किसी को जानवर बनाया है और किसी को इनसान। जब तक प्राणी जीवित है, तब तक उसकी अलग पहचान है, लेकिन जब वह मर जाता है तो मिट्टी में मिल जाता है। उस समय उसकी अलग पहचान नहीं की जा सकती। इसके माध्यम से लेखक यह भी कहना चाहता है कि किसी भी प्राणी को तुच्छ नहीं समझना चाहिए। इस धरती पर सभी का समान अधिकार है। मनुष्य सभी प्राणियों में बुद्धिमान है; अतः उसे सभी के दुःख-दर्द को महसूस करना चाहिए।

प्रश्न 23 : लेखक की माँ ने उसे क्या-क्या शिक्षाएँ दीं? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : लेखक की माँ ने उसे निम्नलिखित शिक्षाएँ दीं–

(i) सूरज छिपने के बाद पेड़ों से पत्ते नहीं तोड़ने चाहिए; क्योंकि इससे वे रोने लगते हैं।

(ii) दीया-बत्ती के समय फूलों को नहीं तोड़ना चाहिए, वे बद्दुआ देते हैं।

(iii) दरिया पर जाओ तो उसे सलाम करो, वह खुश होता है।

(iv) कबूतरों को नहीं सताना चाहिए, वे हज़रत मुहम्मद को बहुत ही प्रिय हैं। उन्होंने कबूतरों को अपनी मज़ार के नीले गुंबद पर घोंसले बनाने की इज़ाज़त दे रखी है।

(v) मुर्गे को परेशान नहीं करना चाहिए। वह मुल्ला से भी पहले अज़ान देकर सबको सवेरे जगाता है।

प्रश्न 24 : सुलेमान, शेख अयाज़ के पिता और नूह के स्वभाव की उन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए, जो उन्हें आज के मनुष्यों से अलग करती हैं। ***(CBSE 2015)***

उत्तर : (i) सुलेमान मनुष्यों के ही नहीं, बल्कि पशु-पक्षियों के भी राजा थे। वे चींटी जैसे छोटे-से जीव की सुरक्षा का भी ध्यान रखते थे। इसीलिए हर जीव ईश्वर से उनके लिए दुआ करता था। वे एक सहृदय बादशाह थे।

(ii) शेख अयाज़ के पिता एक संवेदनशील व्यक्ति थे। उनके हृदय में छोटे-छोटे कीटों के प्रति भी संवेदना थी। अपने घर से बेघर हुए एक घ्योंटे को उसके घर पहुँचाने के लिए उन्होंने अपना भोजन भी त्याग दिया था।

(iii) नूह एक बहुत ही करुण पैंगबर थे। उन्होंने एक घायल कुत्ते को दुत्कार दिया था। जब कुत्ते ने कहा–'न मैं अपनी मर्ज़ी से कुत्ता हूँ न तुम अपनी मर्ज़ी से इनसान।' इस वाक्य को सुनकर नूह ने कुत्ते की पीड़ा को महसूस किया। उनका हृदय करुणा से भर उठा और वे पश्चात्ताप में जीवनभर रोते रहे।

आज के मनुष्यों में प्राणियों के प्रति ऐसी संवेदना नहीं है। वे स्वार्थ के वशीभूत अन्य जीवों से उनका ठौर-ठिकाना, भोजन और जीवन छीन रहे हैं।

प्रश्न 25 : पाठ के आधार पर प्रतिपादित कीजिए कि दूसरों के दुःख से दुःखी होने वाले लोग अब कम मिलते हैं। ***(CBSE 2016)***

उत्तर : लेखक ने पाठ में दिखाया है कि पहले सुलेमान, शेख अयाज़ के पिता और नूह जैसे लोग थे, जो छोटे-छोटे जीव-जंतुओं के दुःख को भी महसूस करते थे। पहले लोग बड़े-बड़े दालानों और आँगनों में मिल-जुलकर रहते थे और एक-दूसरे का दुःख-दर्द महसूस करते थे। लेकिन आज ऐसे संवेदनशील लोग नहीं रहे हैं। अब लोगों का दायरा बहुत सीमित हो गया है। वे डिब्बे जैसे छोटे-छोटे घरों में रहते हैं। शहरों में तो लोग स्वार्थ के लिए जंगलों को काटकर नई-नई बस्तियाँ बना रहे हैं। उन्होंने पशु-पक्षियों से उनका ठौर-ठिकाना छीन लिया है। इस कारण कुछ पशु-पक्षी तो समाप्त हो गए हैं और कुछ इधर-उधर मारे-मारे फिर रहे हैं। यदि वे किसी इनसान के घर में ठिकाना बनाते हैं तो लेखक की पत्नी जैसे लोग उनका वह ठिकाना भी छीन लेते हैं। इससे पता चलता है कि अब दूसरों के दुःख से दुःखी होने वाले कम ही मिलते हैं।

प्रश्न 26 : प्रकृति की सहनशक्ति समाप्त होने का क्या परिणाम होता है? पाठ के आधार पर बताइए।

अथवा **बिगड़ते पर्यावरण के लिए हम कितने उत्तरदायी हैं? कैसे कहा जा सकता है कि अब प्रकृति की सहनशक्ति की सीमा समाप्त हो चुकी है? 'अब कहाँ दूसरे के दुःख से दुःखी होने वाले' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।** ***(CBSE 2017)***

उत्तर : बिगड़ते पर्यावरण के लिए केवल हम ही उत्तरदायी हैं। हम निरंतर प्रकृति के साथ छेड़छाड़ करके प्रकृति का संतुलन बिगाड़ रहे हैं। हम पेड़ काटकर और नदियों, तालाबों और समुद्रों का अतिक्रमण करके जहाँ एक ओर पर्यावरण को बिगाड़ रहे हैं, वहीं प्रकृति की सहनशक्ति की सीमा को समाप्त करके उसे क्रोधित भी कर रहे हैं। जब प्रकृति की सहनशक्ति समाप्त हो जाती है तो वह अपना रौद्र रूप दिखाती है। उसके क्रोध के सामने इनसान का अस्तित्व तिनके जैसा लगने लगता है। बंबई के बिल्डर जब समुद्र की ज़मीन को लगातार कई वर्षों तक हथियाते रहे तो समुद्र का धैर्य टूट गया और उसे क्रोध आया तो उसने तीन जहाज़ों को गेंद की तरह उठाकर तीन दिशाओं में फेंक दिया। इसे देखकर सारी बंबई काँप उठी। प्रकृति के कुपित होने का इससे भी भयानक परिणाम हो सकता है।

प्रश्न 27 : 'अब कहाँ दूसरों के दुःख से दुःखी होने वाले' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि बढ़ती हुई आबादी का पशु-पक्षियों के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ रहा है? इसका समाधान क्या हो सकता है? उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए। ***(CBSE 2018)***

उत्तर : बढ़ती हुई आबादी के कारण मनुष्य ने अपनी बस्तियाँ बसाने के लिए समुद्र को पीछे सरकाना शुरू कर दिया, पेड़ों को रास्तों से हटाना शुरू कर दिया। फैलते हुए प्रदूषण ने पंछियों को बस्तियों से दूर भगाना शुरू कर दिया। पेड़ों, जंगलों को काटने के कारण पशु-पक्षियों के स्वाभाविक आवास छिन गए। उनको भोजन-पानी के लिए और अधिक संघर्ष करना पड़ रहा है। यही स्थिति जलीय जीवों की भी है। पशु-पक्षियों के स्वाभाविक आवासों और खाद्य-आपूर्ति के क्षेत्रों के समाप्त होने के कारण उनके अस्तित्व का संकट खड़ा हो गया है। इसी कारण अनके पशु-पक्षियों के अस्तित्व को बचाने के उन्हें संरक्षित घोषित करके उनकी सुरक्षा के उपाय किए जा रहे हैं।

इस समस्या का एकमात्र समाधान यही है कि हम बहुमंजिला इमारतों और राजमार्गों का निर्माण करें, जिससे कम भूमि की आवश्यकता हो और हमें वनों को न काटना पड़े। इसके लिए अगर उन्हें काटना अनिवार्य हो तो वृक्षों को काटने के स्थान पर उन्हें स्थानांतरित करने का प्रयास करना चाहिए या जितने वृक्ष काटे जाएँ उनके स्थान पर उतने ही वृक्ष लगाए जाने चाहिए।

प्रश्न 28 : बढ़ती हुई आबादी का पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ा है?

उत्तर : बढ़ती हुई आबादी का पर्यावरण पर निम्नलिखित प्रभाव पड़ा है–

(i) पहले लोग बड़े-बड़े मकानों में रहते थे, अब डिब्बे जैसे छोटे-छोटे घरों में रहने लगे हैं।

(ii) नई-नई बस्तियाँ बसाने के लिए पेड़ों को काटा जा रहा है और समुद्र को पीछे सरकाया जा रहा है।

(iii) अब सरदी, गरमी और वर्षा असमय और असामान्य होने लगी है।

(iv) भूकंप, बाढ़, तूफ़ान, सूखा आदि प्राकृतिक प्रकोपों में बढ़ोतरी हो गई है।

(v) नए-नए असाध्य रोग बढ़ रहे हैं।

(vi) पेड़ों, पक्षियों और पशुओं के समाप्त होने से प्राकृतिक असंतुलन उत्पन्न हो गया है।

प्रश्न 29 : बढ़ती आबादी के पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों की चर्चा करते हुए स्पष्ट कीजिए कि "नेचर की सहनशक्ति की भी एक सीमा होती है।" ***(CBSE 2019)***

उत्तर : बढ़ती आबादी ने पर्यावरण को अत्यधिक प्रभावित किया है। पहले जमीन के बड़े भाग में जंगल थे। पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों से धरती हरी-भरी थी। चारों ओर हरियाली तथा परिंदों की चहचहाट थी। जनसंख्या के बढ़ने पर लोगों के लिए स्थान विस्तारित करने हेतु जंगलों को काटा गया।

इससे पेड़-पौधों तथा पशु-पक्षियों का पलायन हुआ। प्रकृति का संतुलन बिगड़ने लगा। इसने पर्यावरण को प्रभावित किया। प्रकृति के असंतुलन ने कई विसंगतियों को जन्म दिया है। अनावृष्टि, अतिवृष्टि, बाढ़, तूफ़ान, सुनामी जैसी प्राकृतिक आपदाओं को इस असंतुलन ने ही आमंत्रित किया है।

प्रकृति भी मनुष्य का अत्याधार एक सीमा तक ही सहती है। जब ये अत्याधार सहनशक्ति का अतिक्रमण कर देते हैं, तब वह मनुष्य से बदला लेने पर उतारू हो जाती है, जिसका उदाहरण कुछ साल पहले बंबई में देखने को मिला था। जब समुद्र की लहरों ने जहाज़ों को गेंद की तरह हवा में उछालकर ध्वस्त कर दिया था।